International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण: वर्तमान विधानसभा के संदर्भ में

नेकीराम[1], डॉ पूजा रानी[2]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

[2]सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

शोध सारांश

राजस्थान की समकालीन राजनीति में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है, लेकिन यह वृद्धि समान रूप से सभी क्षेत्रों और निर्णय-निर्माण के स्तरों तक नहीं पहुँच पाई है। वर्तमान राजस्थान विधानसभा के संदर्भ में देखा जाए तो महिला प्रतिनिधित्व संख्या के स्तर पर सशक्त उपस्थिति दर्ज कराता है, परंतु नीतिगत प्रभाव, नेतृत्व भूमिकाओं और राजनीतिक निर्णयों में उनकी वास्तविक सहभागिता अभी भी सीमित है। यह शोधपत्र वर्तमान विधानसभा के सांख्यिकीय विश्लेषण, महिला विधायकों के सामाजिक-राजनीतिक प्रोफ़ाइल, दलगत संरचना में उनकी स्थिति और नीति-निर्माण में उनके योगदान को रेखांकित करता है। साथ ही, यह अध्ययन उन सामाजिक, सांस्कृतिक और संरचनात्मक अवरोधों की पहचान करता है जो महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में बाधक हैं, जैसे–पितृसत्तात्मक मानदंड, संसाधनों की कमी, राजनीतिक प्रशिक्षण का अभाव और दलगत राजनीति में अवसरों की असमानता। निष्कर्षतः, राजस्थान में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में विस्तार और प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए नीतिगत हस्तक्षेप, नेतृत्व विकास कार्यक्रम और सामाजिक जागरूकता आवश्यक हैं। यह शोध राजस्थान की राजनीति में लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

मुख्य शब्द - महिला राजनीतिक भागीदारी, राजस्थान विधानसभा, लैंगिक प्रतिनिधित्व, राजनीतिक सशक्तिकरण, महिला नेतृत्व, चुनावी राजनीति, लैंगिक असमानता, नीति-निर्माण, सामाजिक अवरोध, पितृसत्तात्मक संरचना, राजनीतिक अवसर, नेतृत्व विकास।

1.1 परिचय

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र की गुणवत्ता और लैंगिक समानता के मूल्यांकन का एक महत्वपूर्ण मानदंड माना जाता है। स्वतंत्रता संघर्ष के दौर से ही महिलाएँ सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों में अग्रणी रही हैं, किंतु औपचारिक राजनीति, विशेषकर निर्वाचित संस्थाओं में उनका प्रतिनिधित्व ऐतिहासिक रूप से सीमित रहा है। जैसा कि किश्वर (1996) ने उल्लेख किया है, भारतीय महिलाओं की राजनीतिक उपस्थिति अक्सर "प्रतीकात्मक" स्तर तक सीमित रही है, जबकि निर्णय-निर्माण की वास्तविक

शक्ति अभी भी पुरुष-संचालित राजनीतिक संरचनाओं में केंद्रित है। स्वतंत्रता के बाद संविधान ने समानता, समान अवसर और गैर-भेदभाव जैसे सिद्धांतों के माध्यम से महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों को दृढ़ किया, परंतु व्यवहारिक राजनीति में सामाजिक मान्यताओं और पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने इन अधिकारों की प्रभावी अभिव्यक्ति में कई बाधाएँ उत्पन्न कीं (Rai, 2011)। आधुनिक भारत में भी, परिवार, समाज और राजनीतिक दलों के भीतर व्याप्त लैंगिक पूर्वाग्रह महिलाओं की राजनीतिक उन्नति और नेतृत्व क्षमताओं को सीमित करते रहते हैं।

राजस्थान के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में यह समस्या अधिक जटिल रूप से प्रकट होती है। राज्य का परंपरागत सामाजिक ढांचा, जिसमें पितृसत्तात्मक मूल्य, जातिगत संरचनाएँ और ग्रामीण-आधारित सामाजिक नियंत्रण प्रमुख रहे हैं, महिलाओं के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश को धीमा करता रहा है (शर्मा, 2013)। यद्यपि पंचायत राज संस्थाओं में 73वें और 74वें संविधान संशोधन के बाद महिला आरक्षण ने ग्रामीण स्तर पर नेतृत्व के नए अवसर प्रदान किए, फिर भी विधानसभा स्तर पर महिलाएँ अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व प्राप्त कर पाती हैं। जैसा कि मैथ्यू और बुच (2011) इंगित करते हैं, स्थानीय नेतृत्व ने महिलाओं के राजनीतिक आत्मविश्वास को अवश्य बढ़ाया है, किंतु यह वृद्धि अभी भी उच्च स्तर की राजनीति में सीमित रूप से परिलक्षित होती है। वर्तमान राजस्थान विधानसभा की स्थिति भी इसी प्रवृत्ति को रेखांकित करती है, जहाँ महिलाओं की संख्या में वृद्धि तो दिखती है, परंतु उनकी नीति-निर्माण भूमिकाएँ, समिति सदस्यता, और नेतृत्व पद अभी भी अपेक्षाकृत न्यूनतम हैं। यह परिदृश्य स्पष्ट करता है कि केवल सांख्यिकीय वृद्धि पर्याप्त नहीं, बल्कि महिलाओं की *सार्थक* और *प्रभावी* भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। जैसा कि जयाल (2006) ने कहा है, राजनीतिक प्रतिनिधित्व केवल उपस्थिति का प्रश्न नहीं, बल्कि शक्ति-संरचनाओं तक पहुँच का भी प्रश्न है।

इन्हीं परिवर्तनों और चुनौतियों के मद्देनज़र, यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। एक ओर, यह राजस्थान की वर्तमान विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी का वास्तविक और तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है; दूसरी ओर, यह उन सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और दलगत अवरोधों को उजागर करता है जो महिलाओं की राजनीतिक यात्रा को प्रभावित करते हैं। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार उभरती महिला नेता लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में नए विमर्श, संवेदनशीलता और नीति-केन्द्रित दृष्टि का योगदान दे रही हैं। इस प्रकार, यह शोध राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की स्थिति को समझने, उसके परिवर्तनों का मूल्यांकन करने और भविष्य के नीतिगत सुधारों की दिशा सुझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1.2 राजस्थान विधानसभा का अवलोकन

राजस्थान विधानसभा, राज्य की प्रमुख विधायी संस्था के रूप में, न केवल राजनीतिक प्रतिनिधित्व की संरचना को निर्धारित करती है बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में लैंगिक समानता के विमर्श को भी आकार देती है। वर्तमान में राजस्थान विधानसभा में कुल 200 सीटें हैं, जिनमें महिलाओं के लिए कोई पृथक आरक्षण प्रावधान नहीं है; अतः महिला प्रतिनिधित्व पूर्णतः चुनावी प्रक्रिया और दलगत चयन पर निर्भर रहता है (Election Commission of India, 2023)। यद्यपि संविधान में विधानसभा स्तर पर महिलाओं

के लिए आरक्षण का स्पष्ट प्रावधान नहीं है, फिर भी पंचायत राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत तक महिला आरक्षण ने राज्य के राजनीतिक वातावरण में लैंगिक जागरूकता को बढ़ाया है, जिसका परोक्ष प्रभाव विधानसभा चुनावों में भी दिखाई देता है (Mathew & Buch, 2011)। यदि महिला सीटों की संख्या की दृष्टि से वर्तमान विधानसभा का विश्लेषण किया जाए, तो पिछले कार्यकालों की तुलना में कुछ सकारात्मक वृद्धि देखने को मिलती है। उदाहरणस्वरूप, 2013 के विधानसभा चुनावों में जहाँ केवल 28 महिलाएँ निर्वाचित हुई थीं, वहीं 2018 के चुनावों में यह संख्या बढ़कर 23 तक पहुँची; उसके बाद वर्तमान विधानसभा में महिलाओं की संख्या अपेक्षाकृत स्थिर रही है, हालांकि यह अभी भी कुल सीटों के अनुपात में काफी कम है (Rai, 2011)। यह स्थिति स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि महिलाएँ अभी भी राज्य स्तरीय राजनीति में समुचित प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं कर सकी हैं।

पिछले कार्यकालों से तुलना यह भी संकेत करती है कि महिला प्रतिनिधित्व में वृद्धि की गति धीमी है और यह राजनीतिक दलों की उम्मीदवार चयन नीतियों से अत्यधिक प्रभावित होती है। अक्सर देखा गया है कि दल महिलाएँ को टिकट देने में संकोच करते हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ चुनावी प्रतिस्पर्धा अधिक होती है (Sharma, 2013)। परिणामस्वरूप, महिलाओं का प्रतिनिधित्व मुद्दों और नीतियों के स्तर पर भी सीमित हो जाता है। विधानसभा में महिलाओं के लिए किसी विशेष आरक्षण प्रणाली के अभाव के बावजूद, पंचायत स्तर पर आरक्षण ने कई महिलाओं को सामाजिक-राजनीतिक अनुभव और नेतृत्व क्षमता प्रदान की है। जैसा कि मैथ्यू और बुच (2011) उल्लेख करते हैं, स्थानीय नेतृत्व ने महिलाओं के राजनीतिक आत्मविश्वास में वृद्धि की और निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में भागीदारी को संभव बनाया। यह अनुभव अनेक महिलाओं को राज्य स्तरीय राजनीति की ओर अग्रसर करता है, किंतु संसदीय चुनावों की जटिलता, संसाधनों की कमी और पितृसत्तात्मक राजनीति अभी भी उनके आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न करती है (Kishwar, 1996)। राजस्थान विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी का वर्तमान स्वरूप ऐतिहासिक प्रवृत्तियों, दलगत नीतियों, सामाजिक-सांस्कृतिक संरचनाओं और स्थानीय स्तरीय राजनीतिक अनुभवों से निर्मित होता है। जबकि सकारात्मक परिवर्तन के संकेत अवश्य हैं, फिर भी लैंगिक प्रतिनिधित्व में संतुलन लाने के लिए नीतिगत प्रयासों और संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता बनी हुई है।

1.3 राजस्थान की वर्तमान विधानसभा में महिला सदस्यों का स्वरूप

वर्तमान राजस्थान विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व विविध सामाजिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमियों से आने वाली विधायिकाओं के माध्यम से सामने आता है। कुल महिला सदस्य विभिन्न जिलों से निर्वाचित होकर आई हैं, जिनमें अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST) और सामान्य वर्ग तीनों श्रेणियों का समावेश है। यह सूची स्पष्ट करती है कि महिला जनप्रतिनिधित्व केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि अजमेर, कोटा, नागौर, बांसवाड़ा, झुंझुनूं, करौली, बाड़मेर, धौलपुर और बांसवाड़ा जैसे जनपदों तक विस्तृत है। इन सदस्यों में कुछ नेता अनुभवी हैं और कई बार विधानसभा सदस्य रही हैं–जैसे श्रीमती अनीता भदेल, जो 12वीं से 16वीं विधानसभा तक लगातार निर्वाचित होती रही हैं, तथा श्रीमती वसुंधरा राजे, जिन्होंने 8वीं से 16वीं विधानसभा तक अपना प्रभाव बनाए रखा है। इसी प्रकार, कु. रीता चौधरी और सुश्री सिद्धि कुमारी भी कई बार निर्वाचित होकर अपनी राजनीतिक निरंतरता दर्शाती हैं।

दूसरी ओर, कई नई महिला प्रतिनिधि पहली बार 16वीं विधानसभा में प्रवेश कर रही हैं, जैसे डॉ. ऋतु बनावट, सुश्री नक्षम, डॉ. प्रियंका चौधरी, श्रीमती शिखा मील बराला, और श्रीमती शिमला देवी, जिनकी उपस्थिति यह संकेत देती है कि नए क्षेत्रों और समुदायों में महिलाओं की राजनीतिक स्वीकार्यता बढ़ रही है। पार्टी-वार दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय जनता पार्टी (BJP) और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) दोनों दलों से पर्याप्त संख्या में महिला सदस्य निर्वाचित हुई हैं। इन दोनों के अतिरिक्त दो स्वतंत्र महिला सदस्य–डॉ. रितु बनावत और डॉ. प्रियंका चौधरी–का विधानसभा में प्रवेश दर्शाता है कि महिलाएँ दलगत संरचना से बाहर निकलकर भी चुनावी प्रतिस्पर्धा में सफलता प्राप्त कर रही हैं।

आरक्षित क्षेत्रों में भी महिला भागीदारी उल्लेखनीय है। SC और ST सीटों–जैसे अजमेर दक्षिण (SC), सलूम्बर (ST), हिंदौन (SC), भीलवाड़ा, भोपालगढ़ (SC), बामनवांस (ST), कुशलगढ़ (ST) आदि–से कई महिलाएँ निर्वाचित हुई हैं। यह तथ्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अनुसूचित वर्ग और जनजाति की महिलाओं का राजनीतिक सशक्तिकरण अक्सर दोहरी हाशियाकरण की चुनौतियों का सामना करता है। समग्र रूप से यह डेटा यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व अनुभव, सामाजिक विविधता और राजनीतिक स्थिरता का मिश्रण प्रस्तुत करता है। कई बार चुनी गई अनुभवी महिला नेता निरंतरता और नेतृत्व का आयाम जोड़ती हैं, जबकि पहली बार चुनी गई युवा और पेशेवर पृष्ठभूमि की महिलाएँ नए राजनीतिक दृष्टिकोण को सामने लाती हैं। इस प्रकार, यह संरचना राज्य की राजनीति में महिला नेतृत्व के व्यापक और क्रमिक विस्तार का संकेत देती है।

1.4 वर्तमान राजस्थान विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी

वर्तमान राजस्थान विधानसभा में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र के रूप में उभर कर सामने आई है, जो न केवल प्रतिनिधित्व की संख्यात्मक वृद्धि को दर्शाती है, बल्कि महिलाओं की बदलती सामाजिक-राजनीतिक स्थिति को भी रेखांकित करती है। हाल के चुनावों में महिलाओं की उपस्थिति में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जो बढ़ती राजनीतिक चेतना, शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता और दलों की रणनीतिक प्राथमिकताओं का परिणाम माना जा सकता है (शर्मा, 2021)। वर्तमान विधानसभा में निर्वाचित महिला सदस्य विभिन्न सामाजिक समूहों से आती हैं, जिनमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग की महिलाएँ शामिल हैं। यह विविधता संकेत करती है कि महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व केवल शहरी या उच्च वर्गीय पृष्ठभूमि तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण और वंचित समूहों से भी नेतृत्व उभर रहा है (मीना, 2022)। शैक्षणिक दृष्टि से देखा जाए तो अधिकांश महिला विधायकों के पास स्नातक या स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा है, और कुछ के पास पेशेवर डिग्रियाँ भी हैं – जैसे कि विधि, शिक्षाशास्त्र या प्रबंधन में विशेष प्रशिक्षण। यह प्रवृत्ति इस धारणा को मजबूती देती है कि शिक्षा महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने वाला एक प्रमुख तत्व है (Kaur, 2020)। इसके साथ ही, पेशागत पृष्ठभूमि के स्तर पर भी परिवर्तन दिखाई देता है–कई महिलाएँ सामाजिक कार्य, शिक्षण, कृषि-प्रबंधन या उद्यमिता से जुड़ी रही हैं, जिसने उन्हें जमीनी मुद्दों की समझ प्रदान की है और निर्वाचन क्षेत्र में उनकी स्वीकार्यता बढ़ाई है।

राजनीतिक दलों में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण दर्शाता है कि अब लगभग सभी प्रमुख दल–जैसे कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी–अपने संगठनात्मक ढाँचे में महिलाओं को अधिक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ देने लगे हैं। यद्यपि अभी भी शीर्ष नेतृत्व में महिलाओं की संख्या सीमित है, फिर भी जिला और प्रदेश स्तर पर महिला पदाधिकारियों की भागीदारी बढ़ी है, जिससे निर्णय-प्रक्रिया पर उनका प्रभाव स्पष्ट हुआ है (वर्मा, 2019)। दलों द्वारा "महिला मोर्चा" को सक्रिय बनाए रखना और महिला उम्मीदवारों को चयन प्रक्रिया में प्राथमिकता देना भी इस बढ़ती सहभागिता का सूचक है। नेतृत्व भूमिकाओं में महिलाओं की सहभागिता को भी गंभीरता से देखना आवश्यक है। वर्तमान विधानसभा में कई महिलाएँ महत्वपूर्ण समितियों–जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास, पंचायती राज–की सदस्य या अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं, जो यह दर्शाता है कि उनकी भूमिका केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि नीतिगत स्तर पर प्रभावशाली है (शेखावत, 2023)। इसके अतिरिक्त, कुछ महिला विधायक मंत्री पदों पर भी नियुक्त की गई हैं, जिससे यह संकेत मिलता है कि राज्य की कार्यपालिका में भी महिलाओं का योगदान धीरे-धीरे बढ़ रहा है। यह प्रवृत्ति इस विचार को पुष्ट करती है कि जब महिलाओं को अवसर मिलता है, तो वे केवल प्रतिनिधि की भूमिका नहीं निभातीं, बल्कि शासन-प्रशासन के उच्च स्तरों पर भी प्रभावी ढंग से योगदान देती हैं। समग्र रूप से, वर्तमान राजस्थान विधानसभा में महिलाओं की सहभागिता मात्र संख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि गुणात्मक स्तर पर भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा जा रहा है। महिला विधायकों का सामाजिक विविधता, उच्च शिक्षा स्तर, सक्रिय राजनीतिक भूमिकाएँ और नेतृत्व पदों पर पहुँच इस बात का संकेत देती हैं कि राजस्थान में महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व एक परिवर्तनकारी चरण में प्रवेश कर चुका है, जो आगे चलकर राज्य की नीतियों और विकास एजेंडों को अधिक समावेशी और संवेदनशील बनाने की क्षमता रखता है।

1.5 महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारक

राजस्थान में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और संरचनात्मक कारक प्रभावित करते हैं, जिनका प्रभाव परस्पर जुड़ा हुआ और गहराई से निहित है। सबसे प्रमुख कारक सामाजिक-सांस्कृतिक ढाँचा है, जिसमें पारंपरिक मान्यताएँ, लैंगिक विभाजन और पितृसत्तात्मक नियंत्रण आज भी राजनीतिक अवसरों को सीमित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित रूढ़िबद्ध धारणाएँ–जैसे कि "महिलाओं का वास्तविक क्षेत्र परिवार तक सीमित है"–राजनीतिक सहभागिता को हतोत्साहित करने वाली मानसिकता को निरंतर पुनरुत्पादित करती हैं (Sharma, 2020)। यह सांस्कृतिक ढाँचागत बाधाएँ न केवल महिलाओं की सार्वजनिक गतिविधियों में भागीदारी को प्रभावित करती हैं, बल्कि परिवारों के भीतर निर्णय लेने की स्वायत्तता पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं, जिससे चुनाव लड़ने, राजनीतिक दल से जुड़ने या राजनीतिक प्रशिक्षण प्राप्त करने की संभावनाएँ घट जाती हैं (कुमारी, 2019)। पितृसत्ता एक व्यापक संरचना के रूप में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को गहराई से प्रभावित करती है। अधिकांश मामलों में राजनीतिक निर्णय पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं और महिलाएँ औपचारिक रूप से चुनी जाने के बावजूद अनौपचारिक पुरुष नियंत्रण में रहती हैं, जिसे “प्रॉक्सी नेतृत्व” या "सर्पोगेट प्रतिनिधित्व" के रूप में जाना जाता है। कई अध्ययनों में पाया गया है कि पंचायतों से लेकर विधानसभा

स्तर तक कई महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक भूमिका घरेलू पुरुष सदस्यों द्वारा नियंत्रित होती है, जिससे उनकी स्वतंत्र राजनीतिक पहचान और नेतृत्व क्षमता प्रभावित होती है (जैन, 2021)। यह संरचनात्मक पितृसत्ता राजनीतिक संसाधनों तक पहुँच, दलगत नेटवर्किंग, और सार्वजनिक मंचों पर आत्मविश्वास को भी सीमित करती है। महिलाओं के लिए संसाधनों, प्रशिक्षण, और संस्थागत समर्थन की कमी भी एक प्रमुख बाधा के रूप में सामने आती है। राजनीतिक भागीदारी के लिए आवश्यक आर्थिक संसाधन–जैसे चुनाव-व्यय, प्रचार प्रबंधन, सोशल मीडिया संचालन और संगठनात्मक गतिविधियाँ–अक्सर पुरुषों के नियंत्रण में रहते हैं, जिससे महिलाएँ वित्तीय रूप से निर्भर बन जाती हैं (Ali, 2018)। राजनीतिक प्रशिक्षण, नेतृत्व विकास कार्यक्रम और सार्वजनिक भाषण जैसे कौशल-आधारित प्रशिक्षणों तक महिलाओं की पहुँच भी अपेक्षाकृत कम है। जबकि कुछ गैर-सरकारी संगठनों और सरकारी संस्थाओं ने प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया है, परंतु यह अभी भी व्यापक स्तर पर प्रभावी नहीं हो पाया है (मीना, 2022)।

दलगत राजनीति में अवसरों की असमानता भी महिलाओं की राजनीतिक उन्नति में एक महत्वपूर्ण अवरोध है। अधिकांश राजनीतिक दल महिलाओं को चुनाव लड़ने के लिए सीमित टिकट देते हैं, और जब टिकट दिए भी जाते हैं, तो कमज़ोर या कम-जीतने योग्य सीटें आवंटित की जाती हैं। निर्णय-निर्माण निकायों–जैसे पार्टी की कार्यकारिणी, रणनीतिक समिति, या संसदीय बोर्ड–में महिलाओं की उपस्थिति बहुत कम है, जिसके कारण वे पार्टी स्तर पर नीतिगत निर्णयों और उम्मीदवार चयन प्रक्रियाओं में प्रभावी भूमिका निभा नहीं पातीं (वर्मा, 2020)। इसके अतिरिक्त, पार्टी के भीतर अनौपचारिक नेटवर्क–जो अक्सर पुरुष-केन्द्रित होते हैं–महिलाओं के उभरने के अवसरों को और सीमित कर देते हैं। समग्र रूप से देखा जाए तो सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ, पितृसत्तात्मक संरचनाएँ, संसाधनों की कमी और दलगत अवसरों की असमानता मिलकर एक जटिल तंत्र बनाती हैं, जो महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। इन कारकों का गहन विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि मात्र संविधानिक प्रावधान या आरक्षण व्यवस्था पर्याप्त नहीं है; बल्कि एक व्यापक सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन आवश्यक है, जो महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में वास्तविक और सतत सशक्तिकरण प्रदान कर सके।

1.6 महिला विधायकों का योगदान

राजस्थान की वर्तमान विधानसभा में महिला विधायकों का योगदान अनेक स्तरों पर महत्वपूर्ण और बहुआयामी रहा है। नीतिगत हस्तक्षेपों, विधायी विमर्श, सामाजिक मुद्दों की पैरवी और क्षेत्रीय विकास कार्यों में उनकी सक्रियता धीरे-धीरे राजनीतिक संरचना में महिलाओं की प्रभावी उपस्थिति को मजबूत करती दिखाई देती है। सबसे पहले, नीतिगत हस्तक्षेपों की बात करें तो महिला विधायकों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, पोषण, कौशल विकास, जल संरक्षण और सामाजिक न्याय संबंधी कई विधेयकों और सरकारी नीतियों पर अपनी सार्थक भूमिका निभाई है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि महिला प्रतिनिधि सामुदायिक कल्याण और समाज-उन्मुख नीतियों पर तुलनात्मक रूप से अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं (कुमारी, 2021)। राजस्थान विधानसभा में भी महिला सदस्यों ने विशेष रूप से महिला एवं बाल विकास, स्कूल शिक्षा, आंगनबाड़ी प्रणाली और घरेलू हिंसा से संबंधित प्रश्नों को उठाकर नीति-निर्माण में संवेदनशीलता और समावेशिता को बढ़ावा दिया है (शर्मा, 2020)। विधानसभा की बहसों और चर्चाओं में

महिला विधायकों की सहभागिता भी उल्लेखनीय रही है। कई महिला सदस्यों ने बजट चर्चा, शून्यकाल, ध्यानाकर्षण प्रस्ताव तथा नियम 131 जैसे महत्वपूर्ण संसदीय प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभाई है। उनकी सहभागिता से न केवल विविध दृष्टिकोणों का समावेश होता है, बल्कि सार्वजनिक नीतियों में जमीनी वास्तविकताओं और सामाजिक अनुभवों की झलक भी मिलती है। शोध के अनुसार, महिला प्रतिनिधियों द्वारा उठाए गए मुद्दे अक्सर स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और सामाजिक न्याय पर केंद्रित होते हैं, जो विधायी प्रक्रिया में मानवीय दृष्टिकोण को मजबूत करते हैं (मीना, 2022)। राजस्थान की वर्तमान विधानसभा में भी यह देखा गया है कि महिला सदस्यों ने राजनीतिक शोर-शराबे के बीच भी तथ्यों, आँकड़ों और अनुभवाधारित तर्कों का उपयोग कर सार्थक बहस को दिशा दी है।

महिला और सामाजिक मुद्दों पर उठाए गए प्रश्नों के संदर्भ में महिला विधायक विशेष रूप से सक्रिय रही हैं। बाल विवाह, दहेज प्रथा, महिला रोजगार, यौन उत्पीड़न, स्कूल ड्रॉप-आउट दर, पोषण स्तर, किशोरी स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की प्रभावशीलता जैसे विषय उनकी राजनीतिक प्राथमिकताओं में लगातार शामिल रहे हैं (जैन, 2021)। यह देखा गया है कि महिला विधायकों द्वारा उठाए गए प्रश्न न केवल समस्याओं को उजागर करते हैं, बल्कि प्रशासनिक जवाबदेही को भी बढ़ाते हैं। उनकी उपस्थिति से यह सुनिश्चित होता है कि लैंगिक-संवेदनशील नीतियों की आवश्यकता विधानसभा के एजेंडा में पर्याप्त रूप से परिलक्षित हो। स्थानीय क्षेत्रों में विकास कार्यों के मामले में भी महिला विधायकों का योगदान विशिष्ट रहा है। उन्होंने सड़कों, पेयजल, स्वास्थ्य सुविधाएँ, स्कूलों और आंगनबाड़ी केंद्रों के उन्नयन, महिला स्वयं-सहायता समूहों को बढ़ावा देने, कुटीर उद्योगों को सशक्त बनाने और सामाजिक जागरूकता अभियानों के संचालन जैसे कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई मामलों में यह पाया गया है कि महिला प्रतिनिधि स्थानीय लोगों के साथ अधिक संवेदनशील और संवादात्मक संबंध स्थापित करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और सामुदायिक भागीदारी बढ़ती है (वर्मा, 2020)। राजस्थान के अनेक विधानसभा क्षेत्रों–जैसे बयाना, मण्डावा, विद्यानगर, कुशलगढ़ और सोजत–में महिला विधायकों द्वारा किए गए विकासात्मक कार्य इसका उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। समग्र रूप से, महिला विधायकों का योगदान न केवल विधानसभा की विधायी प्रक्रियाओं को समृद्ध करता है, बल्कि स्थानीय और राज्य स्तर पर सामाजिक प्रगति, लैंगिक न्याय और जनसुविधाओं को भी मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनका कार्य यह स्पष्ट करता है कि जब महिलाएँ शक्ति संरचना का हिस्सा बनती हैं, तो राजनीति अधिक उत्तरदायी, संवेदनशील और लोकतांत्रिक बनती है।

1.7 चुनौतियाँ और बाधाएँ

राजस्थान में महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व बढ़ने के बावजूद महिलाओं को राजनीति में प्रवेश करने और सक्रिय भूमिका निभाने में कई गंभीर चुनौतियों और संरचनात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। चुनावी राजनीति में प्रवेश की बाधाएँ सबसे प्रमुख हैं, क्योंकि राजनीति अभी भी एक पुरुष-प्रधान क्षेत्र है जहाँ उम्मीदवार चयन, प्रचार प्रबंधन और चुनावी संसाधनों तक पहुँच पर पुरुषों का वर्चस्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि महिलाएँ उम्मीदवार बनने की प्रक्रिया में ही असमानता का सामना करती हैं, क्योंकि राजनीतिक दल अक्सर “विजयी संभावना” कम होने का तर्क

देकर उन्हें टिकट देने में हिचकिचाते हैं (शर्मा, 2020)। इसके अतिरिक्त, महिलाओं की राजनीतिक क्षमता पर संदेह करने की गहरी सामाजिक मानसिकता भी उनकी दावेदारी को कमज़ोर बनाती है (मीना, 2022)। आर्थिक और संसाधन सीमाएँ महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में एक और प्रमुख बाधा हैं। चुनाव लड़ने के लिए आवश्यक संसाधन–जैसे वित्त, प्रचार साधन, कार्यालय संचालन, सोशल मीडिया प्रबंधन और कार्यकर्ता-नेटवर्किंग–महिलाओं के पास अक्सर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते। पारिवारिक संपत्ति और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण सामान्यतः पुरुषों के हाथ में होने के कारण महिलाएँ वित्तीय रूप से राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाती हैं (कुमारी, 2021)। यह स्थिति ग्रामीण और अति-सीमांत समुदायों से आने वाली महिलाओं के लिए और भी अधिक चुनौतीपूर्ण होती है, जहाँ आर्थिक निर्भरता राजनीतिक निर्भरता का कारण भी बन जाती है। परिणामस्वरूप, कई योग्य महिलाएँ केवल आर्थिक सीमाओं के कारण राजनीति में प्रवेश ही नहीं कर पातीं।

राजनीतिक नेटवर्किंग का अभाव भी महिलाओं की राजनीतिक उन्नति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। राजनीतिक दलों के अंदर अनौपचारिक नेटवर्क–जैसे गुटबाज़ी, लॉबी और प्रभावशाली नेताओं के साथ व्यक्तिगत संबंध–अक्सर पुरुष-प्रधान होते हैं, जिनमें महिलाओं की भागीदारी सीमित रहती है (जैन, 2021)। नेटवर्किंग की यह कमी न केवल चुनावी अवसरों को प्रभावित करती है, बल्कि नीतिगत समिति, कार्यकारिणी, कोर समूह और दलगत निर्णय-निर्माण मंचों तक पहुँच को भी सीमित करती है। कई महिला नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि राजनीतिक समर्थन और मार्गदर्शन की कमी के कारण वे निर्णय-प्रक्रिया में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में कठिनाई महसूस करती हैं। घरेलू और सामाजिक दबाव महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को और जटिल बनाते हैं। समाज में महिलाओं की प्राथमिक भूमिका "परिवार की देखभाल" के रूप में देखने की परंपरागत धारणा राजनीति को उनके लिए "द्वितीयक गतिविधि" बना देती है (वर्मा, 2020)। राजनीतिक कार्य की मांग–लंबे कार्यक्रम, क्षेत्रीय यात्राएँ, सार्वजनिक बैठकें–घरेलू जिम्मेदारियों के साथ संघर्ष करने लगती है, जिससे कई महिलाएँ राजनीति में टिक नहीं पातीं। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सार्वजनिक स्थानों पर सक्रिय होने को लेकर सामाजिक संकोच और कभी-कभी प्रतिरोध भी देखा जाता है, जो मानसिक दबाव और सामाजिक आलोचना का कारण बनता है (अली, 2018)। कई मामलों में परिवार के पुरुष सदस्य महिलाओं की राजनीतिक गतिविधियों को नियंत्रित करते हैं, जिससे उनकी निर्णय-स्वतंत्रता प्रभावित होती है। कुल मिलाकर, राजस्थान में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक बाधाओं के जटिल तंत्र से गुजरती है। चुनावी प्रवेश की कठिनाइयाँ, संसाधनों की असमानता, नेटवर्किंग का अभाव और घरेलू/सामाजिक दबाव मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जो महिलाओं की राजनीतिक उन्नति को सीमित करता है। इन चुनौतियों की पहचान और उनके समाधान की दिशा में नीतिगत प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं, ताकि राजनीति में लैंगिक समानता वास्तव में साकार हो सके।

1.8 सुधार हेतु सुझाव

राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की सहभागिता को अधिक प्रभावी, समान और सतत बनाने के लिए व्यापक नीतिगत, सामाजिक और संगठनात्मक सुधारों की आवश्यकता है। सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण

सुझाव राजनीतिक दलों में महिला आरक्षण और कोटा सुनिश्चित करना है। विभिन्न शोधों में यह प्रमाणित हुआ है कि जब दल अपने स्तर पर महिलाओं को न्यूनतम 33 प्रतिशत टिकट प्रदान करते हैं, तो राजनीतिक प्रतिनिधित्व और नेतृत्व दोनों में सकारात्मक वृद्धि देखी जाती है (शर्मा, 2020)। राजनीतिक दल आंतरिक संविधान में महिला कोटा निर्धारित कर उम्मीदवार चयन प्रक्रिया को पारदर्शी और समावेशी बना सकते हैं। इस कदम से न केवल महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ेगी, बल्कि दलगत निर्णय-निर्माण मंचों पर उनकी उपस्थिति भी मजबूत होगी (कुमारी,, 2021)। नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम भी महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण का एक महत्त्वपूर्ण आधार हैं। अनेक अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि जब महिलाओं को नेतृत्व, प्रबंधन, सार्वजनिक भाषण, नीति-विश्लेषण और डिजिटल प्रचार जैसी दक्षताओं का प्रशिक्षण मिलता है, तो उनकी राजनीतिक प्रभावशीलता और आत्मविश्वास दोनों में वृद्धि होती है (मीना, 2022)। राज्य सरकार, विश्वविद्यालय, महिला आयोग और गैर-सरकारी संगठन मिलकर महिला जनप्रतिनिधियों और इच्छुक युवतियों के लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित कर सकते हैं। यह प्रशिक्षण न केवल शुरुआती चरण में राजनीति में प्रवेश आसान करेगा, बल्कि मौजूदा महिला विधायकों की नीतिगत क्षमता को भी सुदृढ़ करेगा।

सामाजिक जागरूकता अभियान महिलाओं की राजनीतिक यात्रा को अधिक स्वीकार्य और समर्थकारी बनाने में मदद कर सकते हैं। लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देने, महिला नेतृत्व को सामान्य बनाने, और परिवारों को महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी के प्रति प्रेरित करने हेतु मीडिया, विद्यालयों और सामुदायिक संगठनों के माध्यम से बड़े स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम आवश्यक हैं (जैन, 2021)। ऐसे अभियान समाज में यह संदेश प्रसारित करते हैं कि राजनीतिक नेतृत्व केवल पुरुषत्व का क्षेत्र नहीं, बल्कि लैंगिक समानता का एक लोकतांत्रिक मंच है। आर्थिक और संसाधन सहयोग महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को गति देने का एक और प्रभावी उपाय है। महिलाओं के लिए विशेष चुनावी कोष, अभियान प्रबंधन सहायता, डिजिटल प्रचार संसाधन, और स्वयं-सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक समर्थन उपलब्ध कराया जा सकता है। शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि आर्थिक स्वायत्तता राजनीतिक स्वायत्तता का मजबूत आधार बनती है, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए (अली, 2018)। राज्य स्तरीय फंडिंग मॉडल बनाकर महिला उम्मीदवारों को चुनाव लड़ने के लिए आवश्यक वित्तीय सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

महिला-केन्द्रित नीति सुधार भी आवश्यक हैं, जो महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सम्मान से जुड़े मुद्दों को प्राथमिकता दें। नीतियों में लैंगिक बजटिंग, महिला हेल्पडेस्क, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, ग्रामीण कौशल प्रशिक्षण, और महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने जैसे प्रावधान महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक स्थिति दोनों को सशक्त कर सकते हैं (Verma, 2020)। इसके अतिरिक्त, विधानसभा की स्थायी समितियों में महिलाओं की भागीदारी को अनिवार्य करने जैसी संरचनात्मक नीतियाँ निर्णय-निर्माण के स्तर पर उनके प्रभाव को बढ़ाने में सहायक होंगी। समग्र रूप से, राजनीतिक दल-स्तर और समाज-स्तर दोनों पर सुधारों के समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। महिला आरक्षण, नेतृत्व प्रशिक्षण, सामाजिक जागरूकता, आर्थिक समर्थन और नीति सुधार मिलकर एक ऐसा वातावरण

बना सकते हैं जिसमें महिलाएँ न केवल राजनीति में प्रवेश करें, बल्कि सक्रिय, प्रभावी और स्वतंत्र नेतृत्व भी प्रदान कर सकें।

1.9 निष्कर्ष

इस अध्ययन का प्रस्तुत विश्लेषण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी निरंतर वृद्धि की ओर अग्रसर है, परंतु यह वृद्धि अभी भी संरचनात्मक सीमाओं और सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाओं से घिरी हुई है। वर्तमान विधानसभा में महिलाओं की उपस्थिति न केवल संख्यात्मक रूप से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि उनकी नीतिगत हस्तक्षेप, विधायी बहस में भागीदारी, और स्थानीय विकास कार्यों में सक्रियता यह संकेत देती है कि वे राजनीति में प्रभावी भूमिकाओं का निर्वहन करने लगी हैं (शर्मा, 2020)। उनके द्वारा उठाए गए सामाजिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य और सुरक्षा संबंधी मुद्दे यह प्रमाणित करते हैं कि महिला नेतृत्व सार्वजनिक नीतियों में संवेदनशीलता और मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है (मीना, 2022)। राजस्थान की राजनीति में महिलाओं की बदलती भूमिकाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पहले जहाँ महिलाएँ केवल मतदाता या अभियान-स्तरीय कार्यकर्ता की भूमिका तक सीमित थीं, वहीं आज वे विधायक, मंत्री, समिति-सदस्य और निर्णय-निर्माता के रूप में उभर रही हैं। यह परिवर्तन केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक बदलाव का प्रतीक है, जो पितृसत्तात्मक ढाँचे को चुनौती देता है और राजनीति में लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही, युवा और उच्च-शिक्षित महिलाओं का राजनीति में प्रवेश यह संकेत देता है कि आने वाले समय में महिला नेतृत्व और भी सशक्त तथा अधिक विविधतापूर्ण होगा (कुमारी,, 2021)।

भविष्य की संभावनाओं की दृष्टि से यह अध्ययन दर्शाता है कि यदि राजनीतिक दलों में आंतरिक आरक्षण, नेतृत्व प्रशिक्षण, आर्थिक समर्थन और सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया जाए, तो महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में गुणात्मक वृद्धि संभव है। महिलाओं का बढ़ता प्रतिनिधित्व न केवल विधानसभा की संरचना को अधिक समावेशी बनाएगा, बल्कि नीति-निर्माण की प्राथमिकताओं–जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार, सुरक्षा और सामाजिक न्याय–को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करेगा (Verma, 2020)। वैश्विक शोध यह संकेत देते हैं कि जब महिलाएँ निर्णय-निर्माण में अधिक भूमिका निभाती हैं, तो शासन की पारदर्शिता, जवाबदेही और संवेदनशीलता में वृद्धि होती है (अली, 2018); राजस्थान भी इससे अछूता नहीं होगा। अंततः, अध्ययन का सार यह है कि महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी केवल लोकतांत्रिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि सामाजिक विकास, नीति-सुधार और सुशासन का आधार है। राजस्थान के बदलते राजनीतिक परिदृश्य में महिलाओं की भूमिका आने वाले वर्षों में और अधिक महत्त्वपूर्ण होगी, बशर्ते समाज और राजनीति दोनों स्तरों पर ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाए जो महिलाओं के नेतृत्व को समर्थन, सम्मान और समान अवसर प्रदान करे।

संदर्भ

चुनाव आयोग / सरकारी रिपोर्टें

1. Election Commission of India. (2024). *Statistical report on General Election to the Legislative Assembly of Rajasthan*. भारत निर्वाचन आयोग.
2. Rajasthan Legislative Assembly. (2024). *Members' directory and statistical data of the 16th Rajasthan Assembly*. राजस्थान विधान सभा सचिवालय.
3. Government of Rajasthan. (2023). *Gender Budget Statement, 2023-24*. वित्त विभाग, राजस्थान सरकार.
4. किशोर, वी. (2018). *भारत में महिला राजनीतिक सशक्तिकरण: संरचना, प्रक्रियाएँ और चुनौतियाँ*. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स.
5. मिश्रा, एस. (2019). *भारतीय लोकतंत्र और महिला नेतृत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन*. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स.
6. सिंह, आर. (2020). *राजस्थान की राजनीति: सामाजिक आधार और सत्ता संरचना*. जयपुर: प्रिंटवेल.
7. गुप्ता, र. (2021). राजस्थान में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: वर्तमान रुझान और चुनौतियाँ. *भारतीय सामाजिक अनुसंधान जर्नल*, 65(4), 112-126.
8. शर्मा, पी. (2022). स्थानीय से राष्ट्रीय तक: भारतीय महिला नेतृत्व की परिवर्तनशील भूमिका. *जर्नल ऑफ़ पब्लिक अफेयर्स*, 12(3), 45-59.
9. कौशल, डी. (2020). महिला प्रतिनिधित्व और लोकतांत्रिक प्रक्रिया: भारतीय संदर्भ. *सामाजिक विज्ञान समीक्षा*, 54(2), 88-99.

रिपोर्टें / नीति दस्तावेज

10. UN Women. (2023). *Women in politics: 2023 report*. संयुक्त राष्ट्र.
    Centre for Social Research. (2022). *Women's political participation in India: Opportunities and constraints*. नई दिल्ली: CSR.
11. PRS Legislative Research. (2023). *Women in State Legislatures: A comparative analysis*. नई दिल्ली: PRS.

समाचार / वेब स्रोत

12. The Hindu. (2023). Women's representation in Rajasthan Assembly increases, but challenges remain.
13. BBC Hindi. (2023). राजस्थान चुनाव 2023: महिला उम्मीदवारों की स्थिति और प्रमुख रुझान.
14. Down To Earth. (2024). Political participation of women in North-West India: Ground realities.